दिनांक 11 सितम्बर, 2009 को मोतीमहल लान, लखनऊ में आयोजित 7वें राष्ट्रीय पुस्तक मेला के उद्घाटन समारोह हेतु महामहिम श्री राज्यपाल का उद्बोधन।

देवियों और सज्जनों,

आज यहाँ आयोजित 7वें राष्ट्रीय पुस्तक मेले का उद्घाटन करते हुए मुझे हर्ष और गर्व का अनुभव हो रहा है। मैं श्री मनोज सिंह चन्देश का आभार व्यक्त करता हूँ कि जिन्होंने मुझे इस पुस्तक मेले के उद्घाटन हेतु आमंत्रित किया। यह प्रसन्नता की बात है कि इस मेले में अनेकों भाषाओं एवं विषयों की पुस्तकें उपलब्ध हैं।

अध्ययन, पठन, पाठन और मनन हमारी भारतीय संस्कृति के अभिन्न अंग रहे हैं। हमारी भारतीय संस्कृति का इतिहास 5000 वर्ष से भी पुराना है। लिपि का आविष्कार होने के पहले ग्रन्थ स्मृति से एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को पहुँचाये जाते थे। लिपि का आविष्कार होने के बाद ग्रन्थ लिखे जाने लगे। भोज पत्रों तथा ताड़ पत्रों पर लिखे गये इन ग्रन्थों का संग्रह गुरूओं के पास रहता था। वस्तुतः यह सच है कि 'पुस्तकें भवति पंडितः' यानी वही व्यक्ति पंडित होता है, विद्वान होता है, जिसके पास पुस्तकें होती हैं। पुस्तकों की प्राप्ति के लिये हमें निरन्तर प्रयासशील रहना चाहिए। इस प्रकार के

आयोजन पुस्तकों के प्रति पाठकों को आकृष्ट करने का एक अच्छा एवं सराहनीय कार्य है।

यहाँ पर मुझे यह जानकर हर्ष हो रहा है कि इसी लखनऊ में आयोजित प्रथम राष्ट्रीय पुस्तक मेले में जहाँ बुक स्टालों की संख्या 65 और पुस्तकों की बिक्री लगभग 52 लाख थी, वहीं छठे राष्ट्रीय पुस्तक मेले में बुक स्टालों की बढ़कर 135 और पुस्तकों की बिक्री लगभग 1 करोड़ 25 लाख हो गई। जो इस बात का द्योतक है कि इस प्रकार के आयोजनों के प्रति लोगों में जागरूकता उत्पन्न हो रही है।

पुस्तकें न बिकने का एक कारण आज का आधुनिक परिवेश भी है। क्योंकि लोग अद्यतन जानकारी हासिल करने के लिये इण्टरनेट जैसे संसाधनों का उपयोग करने लगे हैं। टी0वी0, कम्प्यूटर आदि के कारण लोगों में पढ़ने की प्रवृत्ति भी कम हो रही है। पत्र लेखन एक विधा हुआ करती थी। लोग एक दूसरे की प्रशंसा करते थे देखो कितना अच्छा पत्र लिखा है। उर्दू विषय में मिर्जा गालिब के ख़त वास्तव में लाजवाब हैं। मगर पत्र की जगह अब सूक्ष्म एसएमएस ने ले लिया है। लेखन और प्रकाशन के बाद जब पुस्तकें बाजार में आती हैं तो हम सब, जो साहित्य के विद्यार्थी हैं, साहित्य प्रेमी हैं इस

दिशा में अवश्य चेष्टा करें कि पुस्तकें प्रकाशित हो तो उन्हें खरीदा भी जाय। यह बात आग्रह के साथ कही जानी चाहिए।

लखनऊ पठन–पाठन का केन्द्र रहा है। यहाँ अगर पुस्तकों को पढ़ने का चलन न होता तो शायद इतने पुस्तकालय न होते जैसे ब्रिटिश लाइब्रेरी, टैगोर लाइब्रेरी, अमीरूद्‌दौला लाइब्रेरी, दानिश महल, गंगा प्रसाद मेमोरियल लाइब्रेरी, राजभवन पुस्तकालय, विधान भवन पुस्तकालय और हजरतगंज स्थित सूचना पुस्तकालय।

वास्तव में इस प्रकार के पुस्तक मेले से छात्र–वर्ग, अध्यापक वर्ग, बुद्धजीवी, लेखक–कवि, विचारक, शोध एवं अनुसंधान से जुड़े सभी लोगों को काफी मदद मिलती है। मैं चाहता हूँ कि शहरों की ही

भांति गाँवों में भी अच्छे पुस्तक मेले का आयोजन किया जाना चाहिए। तभी ज्ञान का प्रसार गाँव–गाँव तक हो सकेगा और देश को ज्ञान, विज्ञान एवं प्रज्ञान से युक्त एक ऐसी प्रबुद्ध पीढ़ी मिल सकेगी, जो देश को प्रगति के मार्ग पर अग्रसर करने में सक्षम होगी।

इस दस दिवसीय पुस्तक मेले के सफल आयोजन हेतु मैं हार्दिक मंगलकामनाएँ देता हूँ।

धन्यवाद।